आलइफीज कालेज, आरा, भोजपुर (बिहार)

B.A. Part-I (Hons) सत्र 2020-21, प्राचीन इतिहास विभाग के तरफ से छात्रों के लिए पठन-पाठन हेतू पाठ्य सामग्री।

डॉ० रामनाथ
सहायक प्राध्यापक
प्राचीन इतिहास विभाग
आलइफीज कालेज, आरा (भोजपुर)
बिहार
सम्पर्क :- मो०नं०- 8986432380

प्रिय छात्रों वैश्विक महामारी कोरोना के चलते महाविद्यालय बंद है जिसके कारण आप लोगों का शैक्षणिक कार्य पुरा नही हो सका लेकिन महामहिम राज्यपाल के निर्देशानुशास विश्वविद्यालयो को स समय परिक्षा लेनी है जिसके फलस्वरूप सभी महाविद्यालयों के प्राध्यापकों को यह निर्देश दिया गया है कि अपने महाविद्यल के छात्रों को विषयनुसार नोट उपलब्ध कराई जाए ताकी छात्र घर बैठे आपना पठ्यक्रम पुरा कर सके।

अतः आदेश का पालन करते हुए B.A. Part-I सत्र-2020-21 प्राचीन इतिहास (Hons) के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम एवं पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। और छात्रों से हमारा आग्रह है कि प्रधान मंत्री के आदेशानुशा भारत से कोरोना के हराने के लिए घर पर रहे एवं सामाजिक दूरी बना कर रखें।

धन्यवाद
रामनाथ

Scanned with CamScanner

B.A. Part-I (Hons) Paper I, पाठ्यक्रम

समय- 3 घण्टे

प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति
(Acient History of India and Culture)

पूर्णांक - 100

प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति
(सिंधु घाटी की सभ्यता से 1200 A.D. तक)

निर्धारित अध्याय :

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत
सिंधु घाटी सभ्यता (नगर योजना, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थिति)।
वैदिक युग (सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थिति)।
छठी शताब्दी में उत्तरी भारत की राजनैतिक परिस्थिति।
मगध साम्राज्य से नन्द तक का उत्थान।
परसीयन और मैसीडोनियन आक्रमण।

मौर्य साम्राज्य :-

चन्द्रगुप्त मौर्य का जीवनवृत एवं उपलब्धि।
अशोक का कलिंग युद्ध, धम्म और इसका प्रचार।
मौर्य साम्राज्य का पतन :- शुंगवंश, सातवाहन, कनिष्क की उपलब्धि।

गुप्त साम्राज्य :-

समुद्रगुप्त एवं चन्द्रगुप्त द्वितीय।
गुप्त साम्राज्य का पतन।
हर्षवर्धन की सांस्कृतिक उपलब्धियां।
पुलिकन द्वितीय की उपलब्धि।
राष्ट्रकूट की उपलब्धि
गोविन्द तृतीय और राष्ट्रकूट का उत्तरी आक्रमण।
राजराज आमा प्रथम और राजेन्द्र चोल की उपलब्धि।

Scanned with CamScanner

B. A. Part-I (Hons) Paper-II, पाठ्यक्रम

समय-3 घण्टे | प्राचीन भारतीय इतिहास | पूर्णांक-100

प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास (आदिकाल से 647 ई० तक)

"Group A"

सामाजिक इतिहास

सामाजिक इतिहास के स्रोत
वर्ण एवं जाति व्यवस्था
आश्रम प्रणाली
संस्कार
महिलाओं का स्थिति
पुत्रों के प्रकार
गुरुकुल व्यवस्था
शिक्षक एवं छात्र सम्बंध
शिक्षा, उद्देश्य और आदर्श
दास प्रथा
अस्पृश्यता

शिक्षण संस्थाएँ :— नालन्दा
विक्रमशिला
तक्षशीला

"Group B"

आर्थिक इतिहास

आर्थिक इतिहास के स्रोत
कर, कृषि, संघ, व्यापार और उद्योग, वाणिज्य, जमीन का स्वामित्व।

Scanned with CamScanner

प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के कौन-2 से साधन हैं? वर्णन करें।

1985-87

प्राचीन भारतीय लेखन कला से परिचित थे, फिर भी उन्होंने इतिहास पर कोई आधुनिक ढंग से लिखा तथ्य नहीं छोड़ा। यही कारण है कि प्राचीन काल में भारतीय हमारी इतिहास के मामले में बिल्कुल अंधकार में थे। भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना के पश्चात प्राचीन इतिहास लिखने का काम आरम्भ हुआ, लेकिन हमारे वैज्ञानिक डी०डी० कोसाम्बी, डी० आर० भण्डारकर, रोमिलाथापर, के०पी० जैसवाल, रामशरण शर्मा, लाला जी गोपाल, बी० एन० एस० यादव, मजूमदार, डॉ० सैंकालिया, दयाराम साहनी, राखालदास बनर्जी आदि विद्वानों के चलते प्राचीन इतिहास जानने के कुछ सामग्रियाँ हमारे सामने आयीं।

अध्ययन की दृष्टि से भारतीय इतिहास को तीन भागों में बाँटा गया है प्राचीन, मध्य, आधुनिक। प्राचीन काल का गहरा अध्ययन किया जाय तो इसे तीन भागों में बाँटा गया है।

(i) इतिहास का वह हिस्सा जिसके सम्बंध में लिखित साधन उपलब्ध नहीं है, प्रागैतिहासिक काल कहलाता है। इसमें व्यक्ति अपेक्षाकृत कम सभ्य था।

(ii) इतिहास का वह हिस्सा जिसके सम्बंध में लिखित साधन उपलब्ध है, ऐतिहासिक काल कहा जाता है।

(iii) जब इतिहास में लेखन कला का प्रमाण मिलता है किन्तु उसे पढ़ना या समझना मुश्किल हो उसे आद्य इतिहास कहा जाता है। हड़प्पा संस्कृति को आद्य इतिहास कहा जा सकता है।

अत: इन सभी को ध्यान में रखकर प्राचीन काल के इतिहास का अध्ययन करने के लिए जो स्रोत हैं उन्हें मुख्य रूप से तीन भागों में बाँट सकते हैं।—

(i) पुरातात्विक स्रोत :-
(ii) साहित्यिक स्रोत :-
(iii) विदेशी विवरण :-

अब मैं इनका वर्णन क्रमश: किये कर रहा हूँ :—

1/ पुरातात्विक स्रोत :→

प्राचीन भारतीय इतिहास अध्ययन करने के लिए खुदाई से प्राप्त या जो स्मारक एवं भवन सामग्री मिलती है उसे पुरातात्विक स्रोत कहते हैं। पुरातात्विक स्रोत इतिहास जानने में सही-2 जानकारी देते हैं, जो कि इतना सही जानकारी कोई साधन नहीं देते। इनको भी कई भागों में बाँटा गया है जैसे :—(i) उत्खनन
(ii) सिक्का
(iii) अभिलेख
(iv) स्मारक एवं भवन।

1. उत्खनन :→

सर जॉन मार्शल के नेतृत्व में 1901 में ही भारत में ऐतिहासिक स्थलों पर खुदाई करके प्राचीन सामग्री प्राप्त की गयी जिसके आधार पर प्राक् इतिहास और आद्य इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।

उत्खनन से कुछ सम्बन्धित स्थल :— आरा गढ़, अहड़, आलमगीरपुर, आमाना, मस्की, चन्दोली, रायमाबाद, हड़प्पा, इनाम गाँव, अतिरंजीखेड़ा, महेश्वर, मोहनजोदड़ो, नागरी, अंजीरा, बरगाँव, चौतेरा, हस्तिनापुर, नासिक आदि।

भारत वर्ष में स्थित उपर्युक्त स्थलों की खुदाई से प्राप्त पत्थर हड्डी के औजार, मकानों के खण्डहर, मिट्टी के बर्तन, आभूषण आदि वस्तुओं के आधार पर प्राचीन काल में मानव की जीवन एवं रहन-सहन के स्तरों की जानकारी होती है। पुरापाषाण युग के कुछ पत्थर के खुरदरे औजार ... [illegible]

सुविधा मिली है कि इस नदि के किनारे मानव 400000 से 200000 वर्ष रहा था। उत्खननों के आधार पर हमें पता चलता है कि लगभग 2500 ई० पू० में ही गंगा की घाटी में भौतिक संस्कृति थी।

यहाँ के लोग मकानों में रहते थे मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल करते थे तथा बहुत तरह के अन्नों का प्रयोग करते थे। मोहन जोदड़ो में खुदाई से 500 से अधिक मुहरें मिली हैं जिससे हमें हड़प्पा संस्कृति के निवासियों की धार्मिक स्थिति का पता चलता है। डॉ० बी० बी० लाल ने हस्तीनापुर के खुदाई के आधार पर बताया है कि महाभारत से वर्णित कौरव - पाण्डवों का युद्ध लगभग 900 ई० पू० में हुआ होगा।

2. सिक्का :⟶ प्राचीन इतिहास जानने में सिक्कों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन सिक्के न केवल खुदाई से बल्कि धरातल पर भी मिले हैं। सिक्कों के बनने में जिन धातुओं का प्रयोग होता था उनमें सोना, चाँदी, ताम्बा, शीसा आदि प्रमुख थे। पकि हुई मिट्टी के सिक्कों का भी प्रचलन था। सिक्कों के द्वारा आर्थिक, प्रशासनिक एवं धार्मिक स्थितियों की भी जानकारी होती है। यहाँ पाये गये पुराने सिक्कों पर अनेक प्रकार के चिन्ह पाये गये हैं, जिससे राजाओं, व्यापारियों, नगर-निगमों प्रशासनिक स्थिति के बारे में जानकारी मिलती है। सिक्कों के आधार पर ही हमें पंचाल के मित्र शासकों और यौधेय आदि गणराज्यों की जानकारी होती है। गुप्त राजाओं की तस्वीर हमें सिक्कों पर ही देखने को मिलते हैं। सिक्कों पर अगर देवी देवताओं की आकृति होती धार्मिक विचारों की जानकारी मिलती है। स्वर्ण सिक्कों अंकित फसलों के चिन्ह से फसल की जानकारी मिलती है, लेकिन सिक्के से सबसे अच्छी जानकारी राजधानी की काल सम्बन्धी जानकारी मिलती है।

3. अभिलेख :⟶ प्राचीन इतिहास जानने में अभिलेख एक महत्वपूर्ण साधन है। मुहरों, प्रस्तर, स्तम्भों, चट्टानों, ताम्रपत्रों, ईंटों, मन्दिरों की दिवालों पर लिखे और अंकित चित्रों से हमें प्राचीन इतिहास जानने में बहुत ही सही-सही जानकारी मिलती है। सिन्धु घाटी में प्राप्त अभिलेख सबसे पुराना है, लेकिन इन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। मौर्य शासक सम्राट अशोक के अभिलेख ऐतिहासिक काल में सबसे प्राचीन हैं। अशोक के द्वारा किये गये कलिंग युद्ध, धार्मिक अवस्था, प्रशासनिक सुधार आदि की जानकारी उनके अभिलेखों द्वारा होती है। उड़िसा प्रान्त में स्थित कलिंग का शासक खारवेल की जानकारी बहुत कुछ हाथीगुम्फा अभिलेख से होता है। कुषाण कालिन अभिलेख काफी संख्या में मिले हैं, जो कुषाण संस्कृति की जानकारी देते हैं। चट्टानों या स्तम्भों पर अभिलेखों के आधार पर राज्य की सिमाओं, शहरों, ग्रामों, नदी सड़क, उपजाऊ भूमि, बंजर भूमि, फसल, विभिन्न पदाधिकारियों, व्यापारिक करों आदि की चर्चा अभिलेखों में रहती है, जो प्राचीन इतिहास जानने में बहुत जानकारी मिलती है।

अब तक 1500 से भी अधिक संख्या में विभिन्न प्रकार के अभिलेख गुप्त काल के पहले से प्राप्त हुए हैं। हाथिगुम्फा का अभिलेख खारवेल राजाओं पर पूर्ण प्रकाश डालता है। उत्तर भारत से अधिक अभिलेख दक्षिण भारत में प्राप्त हुए हैं, किन्तु वे इतने प्राचीन नहीं हैं। इसलिए इनका ऐतिहासिक महत्व भी उतना नहीं है।

4.— स्मारक एवं भवन :⟶ स्मारकों से प्राचीन इतिहास जानने में बहुत ही सही जानकारी मिलती है। उत्खनन द्वारा प्राप्त हुए समग्री द्वारा प्राचीन इतिहास पर पूर्ण प्रकाश मिलता है। प्राचीन स्मारक के अन्तर्गत कितनी वस्तुएं आ सकती हैं यह कहना कठिन है। वास्तव में अभिलेख, मुद्रा तथा ललित कला सम्बंधी वस्तुओं को छोड़कर जो कुछ भी धरती के नीचे या ऊपर बना हो या एक ऐसी वस्तु हो जिससे देखने में आपको प्राचीन की याद आये, वह प्राचीन स्मारक में आएगी। विभिन्न प्रकार के भवन राजप्रसाद, सार्वजनिक हाल, जनसाधारण के घर, विहार मठ, चैत्य, स्तूप, समाधि आदि वस्तुएं हमारे पिछले इतिहास को प्रकाशित करती हैं।

स्मारकों को दो भागों में बाटा गया है :— (i) देशी स्मारक (ii) विदेशी स्मारक।

(i) देशी स्मारक :⟶ देशी स्मारकों में हड़प्पा, तक्षशिला, मथुरा, कोसम, सारनाथ, कसिया, पाटलिपुत्र, नालन्दा, राजगिरि, साँची, भरहुत, आदि स्मारकों की खुदाई हुई है इससे प्राचीन इतिहास सामग्री जानने में बहुत मदद हुई है। [illegible]

Scanned with CamScanner

प्राचीन स्मारकों में की जाती है। स्मारकों से हमें चित्रकला, मूर्तिकला आदि, राजनीति, धर्म, समाज, सांस्कृति, धार्मिक आदि विषयों की जानकारी मिलती है।

(ii) विदेशी स्मारक :→ भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में भी कुछ ऐसे स्मारक चिन्ह प्राप्त हुए हैं, जिनसे प्राचीन भारत के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। इन स्मारकों में जावा, कम्बोज, मलाया, स्याम, कोचीन, चम्पा, बोर्नियो, कोरिया, आदि में प्राचीन स्मारक विशेष उल्लेखनीय हैं।

2. साहित्यिक स्रोत :→

प्राचीन इतिहास जानने के लिए जितनी भी लिखित सामग्रीयाँ मिलती हैं, उन्हें साहित्यिक स्रोत कहते हैं। साहित्य स्रोत को भी दो भागों में बांटा गया है :→

(i) धार्मिक साहित्य :–

(ii) ऐतिहासिक साहित्य :–

1. धार्मिक साहित्य :→

धार्मिक स्रोत को भी तीन भागों में बांटा गया है :—

A → हिन्दु साहित्य

B → बौद्ध साहित्य

C → जैन साहित्य

A — हिन्दु साहित्य :→

इस हिन्दु साहित्य को भी अनेक भागों में ~~बांटा गया है~~ का बारह अध्ययन करेंगे :—

(क) वेद :→ वेद भारत का प्राचीन ग्रन्थ है। वेद चार प्रकार के हैं — ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद, किन्तु अथर्ववेद और ऋग्वेद का महत्व अधिक है।

(i) अथर्ववेद :→ इस वेद से आर्यों की संस्कृति और प्रगति के विविध रूपों की जानकारी मिलती है।

(ii) ऋग्वेद :→ इससे भारती आर्यों के प्रसार और उनके आन्तरिक और बाहरी संघर्ष तथा राजनैतिक और सामाजिक जीवन के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है।

(ख) ब्राह्मण ग्रन्थ :→ इस से वैदिक मंत्रों का प्रयोग और यज्ञों का सविस्तार वर्णन मिलता है।

(ग) सूत्र :→ सूत्र तीन प्रकार के हैं — कल्पसूत्र, गृह्यसूत्र, तथा धर्मसूत्र

(i) कल्पसूत्र :→ इसमें शास्त्रीय ढंग से वैदिक यज्ञों का वर्णन किया गया है।

(ii) गृह्यसूत्र :→ इसमें गृह से सम्बन्धित रखने वाले संस्कार और धार्मिक और सामाजिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

(iii) धर्मसूत्र :→ इसमें राजनैतिक, वैज्ञानिक, और सामाजिक व्यवस्था का वर्णन किया गया है।

(घ) रामायण :→ रामायण में अवध के कोशलों तथा बिहार विदेहों के बहुत भागों का वर्णन किया गया है।

(ङ) उपनिषद :→ इसमें दर्शन सम्बन्धित विचारों का उप व्याख्या हुआ है।

B → बौद्ध साहित्य :→

ब्राह्मण साहित्य की भांति ही बौद्ध साहित्य भी ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। बौद्ध साहित्य में जातक, पिटक, निकाय का महत्वपूर्ण स्थान है।

(i) जातक :→ इसके द्वारा महात्मा बुद्ध की पूर्व की सामाजिक व्यवस्था सम्बन्धित जानकारी मिलती है।

(ii) पिटक :→ इसमें महात्मा बुद्ध के धार्मिक सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है।

C → जैन साहित्य :→

भारतीय इतिहास के लिए जैन साहित्य बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस साहित्य से प्रचुर सामग्री मिलती है। जैन ग्रन्थों के अध्ययन के बिना भारतीय संस्कृति इतिहास में पूर्णता नहीं आ सकती है, क्योंकि इस साहित्य से हमें प्राचीन भारत के कुछ ऐसे पक्षों का परिचय मिलता है जिनका ब्राह्मण ग्रन्थ अथवा बौद्ध साहित्य में भारत चर्चा ही नहीं है या है तो बहुत ही कम। जैन ग्रन्थों में ऐसी अनेक कथाएँ लिखी हैं जिनमें इतिहासकार अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। जैन आगम इसमें सर्वोपरि है। इसमें जैन लोगों के अपनी प्रथम संगति में विभिन्न विचारों और परम्पराओं को संगृहीत किया था। जैन आगम में प्रतिष्ठित स्थान बारह अंगों का है। आचारांगसूत्र ~~और दोनों स्कन्धों~~ में जैन भिक्षुओं के आचार-नियमों का उल्लेख है। सेनापती सूत्र में महावीर के जीवन पर

सुविधा मिली है कि इस नदि के किनारे मानव 400000 से 200000 वर्ष रहा था। उत्खननों के आधार पर हमें पता चलता है कि लगभग 2500 ई० पू० में ही गंगा की घाटी में भौतिक संस्कृति थी। यहाँ के लोग मकानों में रहते थे, मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल करते थे तथा बहुत तरह के अन्नों का प्रयोग करते थे। मोहन जोदड़ो में खुदाई से 500 से अधिक मुहरें मिली हैं जिससे हमें हड़प्पा संस्कृति के निवासियों की धार्मिक स्थिति का पता चलता है। डॉ० बी० बी० लाल ने हस्तीनापुर के खुदाई के आधार पर बताया है कि महाभारत से वर्णित कौरव-पाण्डवों का युद्ध लगभग 900 ई० पू० में हुआ होगा।

2. सिक्का :—→ प्राचीन इतिहास जानने में सिक्कों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन सिक्के न केवल खुदाई से बल्कि धरातल पर भी मिले हैं। सिक्कों के बनने में जिन धातुओं का प्रयोग होता था उनमें सोना, चाँदी, ताम्बा, शीशा आदि प्रमुख थे। पकी हुई मिट्टी के सिक्कों का भी प्रचलन था। सिक्कों के द्वारा आर्थिक, प्रशासनिक एवं धार्मिक स्थितियों की भी जानकारी होती है। यहाँ पाये गये पुराने सिक्कों पर अनेक प्रकार के चिन्ह पाये गये हैं, जिससे राजाओं, व्यापारियों, नगर-निगमों प्रशासनिक स्थिति के बारे में जानकारी मिलती है। सिक्कों के आधार पर ही हमें पंचाल के मित्र शासकों और यौधेय आदि गणराज्यों की जानकारी होती है। कुछ राजाओं की तस्वीर हमें सिक्कों पर ही देखने को मिलते हैं। सिक्कों पर उभार देवी देवताओं की आकृति होती धार्मिक विचारों की जानकारी मिलती है। स्वर्ण सिक्कों अंकित फसलों के चिन्ह से फसल की जानकारी मिलती है, लेकिन सिक्के से सबसे अच्छी जानकारी राजधानी की काल सम्बंधी जानकारी मिलती है।

3. अभिलेख :—→ प्राचीन इतिहास जानने में अभिलेख एक महत्वपूर्ण साधन है। मुहरों, प्रस्तर, स्तम्भों, चट्टानों, ताम्रपत्रों, ईंटों, मन्दिरों की दिवालों पर लिखे और अंकित चित्रों से हमें प्राचीन इतिहास जानने में बहुत ही सही जानकारी मिलती है। सिन्धु घाटी में प्राप्त अभिलेख सबसे पुराना है, लेकिन इन्हें अभिलेख पढ़ा नहीं जा सका है। मौर्य शासक सम्राट अशोक के अभिलेख ऐतिहासिक काल में सबसे प्राचीन है। अशोक के द्वारा किये गये कलिंग युद्ध, धार्मिक अवस्था, प्रशासनिक सुधार आदि की जानकारी उनके अभिलेखों द्वारा होती है। उड़ीसा प्रान्त में स्थित कलिंग का शासक खारवेल की जानकारी बहुत कुछ हाथीगुम्फा अभिलेख से होता है। कुषाण कालिन अभिलेख काफी संख्या में मिले हैं, जो कुषाण संस्कृति की जानकारी देते हैं। चट्टानों या स्तम्भों पर अभिलेखों के आधार पर राज्य की सिमाओं, शहरों, ग्रामों, नदी सड़क, उपजाऊ भूमि, बेजर भूमि, फसल, विभिन्न पदाधिकारियों, व्यापारिक करों आदि की चर्चा अभिलेखों में रहती है, जो प्राचीन इतिहास जानने में बहुत जानकारी मिलती है।

अब तक 1500 से भी अधिक संख्या में विभिन्न प्रकार के अभिलेख गुप्त काल के पहले से प्राप्त हुए हैं। हाथिगुम्फा का अभिलेख खारवेल राजाओं पर पूर्ण प्रकाश डालता है। उत्तर भारत से अधिक अभिलेख दक्षिण भारत में प्राप्त हुए हैं, किन्तु ये इतने प्राचीन नहीं हैं। इसलिए इसका ऐतिहासिक महत्व भी उतना नहीं है।

4.— स्मारक एवं भवन :—→ स्मारक से प्राचीन इतिहास जानने में बहुत ही सही जानकारी मिलती है। उत्खनन द्वारा प्राप्त हुए सामग्री द्वारा प्राचीन इतिहास पर पूर्ण प्रकाश मिलता है। प्राचीन स्मारक के अन्तर्गत कितनी वस्तुऐं आ सकती हैं यह कहना कठिन है। वास्तव में अभिलेख, गुफा तथा ललित कला सम्बंधी वस्तुओं को छोड़कर जो कुछ भी धरती के नीचे या ऊपर काला हो या एक ऐसी वस्तु हो जिससे देखने में अपने प्राचीन की याद आये, वह प्राचीन स्मारक में आएगी। विभिन्न प्रकार के भवन राजप्रसाद, सार्वजनिक हाल, जनसाधारण के घर, बिहार, मठ, चैत्य, स्तूप, समाधि आदि वस्तुऐं हमारे पिछले इतिहास को प्रकाशित करती हैं।

स्मारकों को दो भागों में बाटा गया है :— (i) देशी स्मारक (ii) विदेशी स्मारक।

(i) देशी स्मारक :—→ देशी स्मारकों में हड़प्पा, तक्षशिला, मथुरा, कोसम, सारनाथ, कसिया, पाटलिपुत्र, नालन्दा, राजगिरि, साँची, भरहुत, आदि स्मारकों की खुदाई हुई है इससे प्राचीन इतिहास सामग्री जानने में बहुत मदद हुई है। आजन्ता ... अजन्ता ...

Scanned with CamScanner

2/ ऐतिहासिक साहित्य :→

हमारे देश में ऐतिहासिक ग्रन्थ निम्न लिखित है, जिनका वर्णन इस प्रकार कर रहे हैं :—

(क) कौटिल्य के अर्थशास्त्र :→ ऐतिहासिक ग्रन्थों में कौटिल्य के अर्थ शास्त्र को विशेष स्थान दिया जाता है। इसमें सम्राट चन्द्रगुप्त के महामंत्री चाणक्य ने मौर्यकाल की राजनीतिक घटनाओं, शासन पद्धति और जनसाधारण के धार्मिक और आर्थिक जीवन पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

राम चौधरी ने लिखा है :— "कौटिल्य के अर्थशास्त्र से प्राप्त सूचनाएं महाकाव्य तथा पुराणों द्वारा प्राप्त सूचनाओं से अधिक विश्वासनीय है।"

(ख) कश्मीरि पंडित कल्हण की राजतरंगिणी :→ ऐतिहासिक ग्रन्थों में यह विशेष प्रसिद्ध है। इसकी रचना बारहवीं शताब्दी के मध्य हुई थी। और इसे कश्मीर के इस समय तक के इतिहास पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

(ग) पातंजलि :→ अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थों में सर्वप्रथम पांतजलि के महाकाव्य का नाम ले सकते हैं। इसमें शुंग वंश के प्रारम्भिक काल की कुछ जानकारी प्राप्त होती है।

इसके अतिरिक्त विल्हण का विक्रमांक देव चरित, गार्गी संहिता, हर्ष चरित, नाटक, मुद्राराक्षस, शुक्रनीतिसार आदि से भी प्राचीन इतिहास जानने की जानकारी मिलती है।

3/ विदेशी विवरण :→

भारतीय सामग्री के अतिरिक्त कुछ विदेशी सामग्री भी प्राप्त होती है, जिससे हमारे भारतीय इतिहास प्रकाश में आ गया है। क्योंकि समय अनुसार हमारे देश में विभिन्न देशों से व्यापारी, विद्यार्थी आदि आते रहे हैं।

A – स्काइलैक्स :→ यह एक यूनानी सैनिक था जो पारसीक सम्राट दारा के अनुसार सिंधु नदी का पता लगाने भारत आया था। उसने अपनी यात्रा का विवरण तैयार किया, किन्तु उसकी जानकारी विशेषकर सिंधु घाटि तक सीमित थी।

B → मेंगास्थनीज :→ यूनानी शासक सेल्यूकस के राजदूत के रूप में चन्द्रगुप्त के दरबार में आया था। वह भारत में 6 वर्षों तक रहा। उसने चन्द्रगुप्त मौर्य के बारे में और उसके सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि जीवन पर प्रकाश डाला है।

C → टालमी :→ यह एक यूनान का भूगोल वेत्ता था। लगभग दूसरी शताब्दी ई० में भारत वर्ष के भूगोल से सम्बंधित एक पुस्तक लिखि। टालमी का दृष्टिकोण पूर्णतया वैज्ञानिक था। अतः इसके विवरण में सत्य का अंश अधिक है।

d → एरियन :→ इसका लेख ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण है। भारत पर मकदूनिया पर विजेता के आक्रमण के विषय में कोई भी भारतीय ग्रन्थ प्रकाश नहीं डालता, ऐसी अवस्था में यदि उपयुक्त लेखकों ने अपनी पुस्तक की रचना न की होती तो सिकंदर के आक्रमण का कोई ज्ञान ही प्राप्त नहीं हो सकता था।

(e) फाह्यान :→ यह एक चीनी यात्री था। 399 ई० में यात्रा की शुरुआत आरम्भ किया था। भारत चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन काल में भारत आया था वह ~~उसके~~ उनके शासन प्रबंध तथा सामाजिक अवस्था का वर्णन किया है।

(d) ह्वेनसांग :→ यह भी एक चीनी यात्री था। यह 629 ई० में हर्षवर्द्धन के शासन काल में भारत आया था। ह्वेनसांग बड़ा ही जिज्ञासु एवं उत्साही व्यक्ति था, उसने भारत का भ्रमण किया था वह हर्ष काल के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सैनिक, राजनैतिक आदि विषयों के बारे में वर्णन किया है। वह हर्ष के बारे में लिखा है कि आज तक दुनियाँ में कोई दानी राजा हुआ तो हर्षवर्द्धन।

अतः इसके अलावे प्लिनि, स्ट्रैबो, तिब्बती लेखक, अरबी लेखकों की देन हम नहीं भूल सकते हैं।

प्राचीन भारत के इतिहास के सम्बंध में कुछ जानकारी हमें जातीय किंवदन्तियों से उपलब्ध होती है, लेकिन इतिहास के कसौटी पर कसने के पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि वे एक रूपी हैं या बहुरूपी। जो किंवदन्तियाँ इन सब कसौटी पर खरी उतरती हैं वे वास्तव में अमूल्य हैं, यदि खरी नहीं उतरती तो उनका मूल्य नहीं के बराबर हो जाती है।

Scanned with CamScanner